

(७) (१३) काशीवास का फल

असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम् ।
काश्यावासः सतां संगः गंगाभ्यः शिवपूजनम् ॥

(काशीखण्डे)

अर्थ - इस असार संसार में चार सार
वस्तु हैं - (१) काशी में वास (२) संग, (३)
गंगाजी में स्नान और (४) शिवजी की पूजा +
~~सर्वसंग~~

मण्ड

यत्सुखं काश्यावासेऽत्र न तद्वद्ब्रह्माण्डये ।
अस्ति चैकचं सर्वं काश्यावासमिलाषुकाः ॥

(काशीखण्ड, अ०-३, श्लो०-२२)

अर्थ - जो सुख काशीवास से प्राप्त होता है,
वह सुख इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में दुर्लभ है।
यदि ऐसा सुख अन्यत्र सुलभ होता तो
सभी लोग काशीवास के आभिषाषी
बन जाते ।

अर्थ
१)

वस्तु कोटिगुणं पुण्यं पुण्यं काश्यावासार्थमुद्युक्ता ।
आत्मानं तारयन् स तु स्वर्गं ह्यैवावाप्स्यति यतः ॥

काशी दर्शन . . .

अर्थ - काशीवास करने वाले से काशीवास
करने वाले को कोटिगुणा पुण्य अधिक होता
है, क्योंकि काशीवास करने वाले तो अपने को
ही तारता है किन्तु पर काशीवास करनेवाला
अपने को तथा जिस वास करता है, उसे भी
दोनों की का उद्धार लेना पड़ेगा ।

काशी की महिमा

यथा मुक्तौ पयोवहातः पतिता जलमिन्दवः ।
मुक्ताः स्युस्तथा काश्यां स्थिताः सर्वेऽपि जन्तवः ॥

(सिद्धिपुराणे .)

अर्थ :— जिस प्रकार मुक्ति में आकाश
से जल गिरने पर मीनी बन जाता
है, उसी प्रकार काशीवास करने वाले
सभी प्राणी मुक्त (शिवरूप) हो
जाते हैं ।

काशीवासजनो देवि ! मम गर्भे वसेत्सदा ।
अतस्तं सोऽयाम्भ्यन्ते प्रतिज्ञेयं यतो मम ॥
(काशीखण्ड, अ०-३७, श्लोक-१३३)

अर्थ →

— भगवान् विश्वनाथ जी भवानी जी
से कहते हैं कि हे देवि ! काशीवासी सदा मेरे
गर्भ में निवास करते हैं । अतः अन्त में मैं
उन्हें मुक्त कर देता हूँ । यही हमारी प्रतिज्ञा है ।

काशीं समाश्रित्यैव यैश्च विश्वैश्वरोऽर्चितः ।
तारकं ज्ञानमासाद्य ते मुक्ताः कर्मपाशतः ॥
(काशीखण्ड, अ०-४२ श्लोक-५६)

अर्थ → जो व्याक्ति काशीवास करते हैं, और
विश्वनाथ भूत-भावन का दर्शन-अर्चन-पूजनादि
करते हैं, वे तारक ज्ञान प्राप्त करके कर्मबन्धन से
मुक्त हो जाते हैं ।

काशी की महिमा

जो सब पापों का भी विरह
से काशी आते हैं ~~जो~~ काशी
में के दर्शन करके दर्शन करके
आनन्दित होते हैं ^{ते ही} ~~काशी~~ के दर्शन
स्नान को दर्शन कर आश्चर्य
और चकित हो जाते हैं काशी चकित
काशी के दर्शन करते ही जन्म
अमृतार के पाप ^{देना} समाप्त होते हैं
और काशी के दर्शन होते ही
मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार
आदि सब शान्त हो जाते हैं। मन
स्विर हो जाता है पापी काशी आते ही
आनन्द से मग्न हो जाता है
और जन्म अमृतार के प्रलय से
काशी की उत्तरावहिनী गङ्गा में
स्नान पावा पाप में फँस कर ~~काशी~~
के दर्शन करने विवश हो जाता है।

Handwritten text in Devanagari script, mostly faded and illegible. The text appears to be a collection of lines or verses, possibly from a manuscript. Some words are visible, such as "विष्णु" (Vishnu) and "शिव" (Shiva), suggesting a religious or philosophical context. The text is written on lined paper and is heavily obscured by fading and damage to the document.

काशी पृथ्वी से अलग और
 त्रिगोलोको से ब्यारी है काशी
 में मेरे हुए मृतक पापियों को
 फूटा जाता आदि सुगन्धिक
 कदों से सजाते है। उनको
 (नाचते हुए) ~~वफा के बाजा बजाते हुये बाजा~~
 बाजे आगे आगे चलाते है चार
 पाकी मनु सैया पर सोया हुआ
 सब को कन्देरी पर छोरे है।

फूटा और लहजा आदि से सजा
 कर मृतक के उपर फूटा, पैसा
 एवं धान के दाना ^{का} बर्षा करते है
 मिशाला गुल्लस चलाते है जैसे
 धर हजारा पराती ^{बाजा} बजा
 जाते हुए कन्देरी से
 कन्या से विवाह करने जाते है

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

बर — ३

बरात लेकर मिनने जाता है
उसी प्रकार काशी में गंगा
व्यक्ति बरात लेकर काशी विश्व
नाथ जी से मिनने जाता है।
गंगा के बराती गृहस्थ राम-
नाथ सत्ते हैं कहते हैं। और
साधु माहात्मा एवं संन्यासी
को प्रहलिन के उपर उसी
प्रकार पूजा-पावा के बर्षा करो
हर साधुओं के बराती हर हर
महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ
ओ गङ्गे कीर्तन करो हर
चदाते हैं।)

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

को जानना करते हैं।

2 दूसरे ^{गरीबों} ~~गरीबों~~ यात्रियों का वर्णन करते हैं। निम्न य यात्रीगण

जाया करते हुए काशी में आते हैं।

गङ्गा स्नान, संध्या - तर्पण, पिण्ड-

दान करके ब्राह्मणों को जलपान

कराते हैं और वन्य शक्ति दक्षिणा

देते हैं। माछू कुहा माओं को जल

पान कराते हैं। ~~तीसरे~~ दिन गङ्गा

स्नान करके गुरु-मन्दिर और

काशी के दर्शनिय स्थल के दर्शन

करने वाले हैं जाते हैं। ~~चौथे~~ ^{चौथे} ~~दिन~~ ^{दिन}

दीन ^(काशी की) ~~यत्र~~ काशी अन्तर्गृही

उत्पादि जाया करने जाते हैं। ~~पन्ना~~

~~पन्ना~~ ^{पन्ना} ~~काशी~~ ^{काशी} ~~काशी~~ ^{काशी}

[Faint handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page. The text is mostly illegible due to fading.]

तो सरे तीर्थ यात्री बिस्व
से काशी आते है मन्त्र काशी
में के दर्शन करके दर्शन करके
आनन्दित होते है काशी के यन्त्र
जन्म को दर्शन कर आश्चर्य
और चकित होजाते है काशी चक्र
काशी के दर्शन करते ही जन्म
जन्मान्तर के पाप ^{नष्ट} सम्प्त होते है
और काशी के दर्शन होते ही
मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार
आदि सब शाका होजाते है। मन
रिक्त होजाता है यात्री काशी आते ही
आनन्द से मग्न होजाता है
और जन्म जन्मान्तर के पाप है
काशी की उत्तर गहिनी गङ्गा में
स्नान गङ्गा गङ्गा में के कर का
के दर्शन करके सिद्ध होते है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी के गङ्गा तट के
निर्ग, धाटु मन्दिर और
विशाल मकान राजा
रत्नान करने वाले धर्म
माओं का दर्शन करने के लिए
प्रातः ५-६ बजे से ११ बजे
तक स्नान करने वालों की दर्शन
होती है ऐसा आचार्य गङ्गाजी
से अस्सी नदी गङ्गा संगम से
बरपा गङ्गा-संगम तक जो
काशी की दर्शन होता है वह
दृश्य विश्व में कई जगहों में नहीं
दिखने मिलता है। जिन्होंने
वह काशी की ^{दृश्य देखा} दर्शन किया उस

Handwritten text in Devanagari script, appearing to be a list or index of items, possibly related to a collection or inventory. The text is written on lined paper and is mostly illegible due to fading and blurring.

काशी के गङ्गा तट के
श्रीमन्महादेव, घाट, मन्दिर और
विशाल मकान राजा
रवाना करने वाले राजा
माओं का दर्शन करने के लिए
प्रातः ५-६ बजे से ११ बजे
तक शान्त कदमों पर चलना
होती है ऐसा आचार्य गङ्गाजी
से आसानी से गङ्गा संगम से
परवा गङ्गा संगम तक जो
काशी की दर्शन होता है वह
दृश्य विश्व में कई भी नहीं
दिखने मिलता है। जिन्होंने
यह काशी की दृश्य देखा और दर्शन किया उस

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

कल्याण को । जीवन प्रयत्न
काशी की याद बना रहता है
यह मनुष्य काशी को भूल
नहीं सकता ^(काशी की धूल को भूलने वाला) यह दूसरे जन्म में
काशी में पुनः आकर (विद्य
के माता काशी में पड़ाया जाता
है) पढ़कर विश्व ज्ञान होकर
ज्ञान प्राप्त कर लेता है

[Faint, illegible handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

30 व्याप्ति को । जिन प्रवक्त
काशी को याद धना रहता है
वह मनुष्य काशी को भूल
नहीं सकता ^{काशी को भूल नहीं} वह दूसरे जन्म में
काशी में पुनः उठकर (विद्य
के माता काशी में पड़ा जा जाता
है) पढ़कर विश्व ज्ञान होकर
ज्ञान प्राप्त करेगा करता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri